IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, July 2025
Impact Factor: 7.67

सांख्य दर्शन में सत्कार्यवाद

डॉ. मनीष प्रसाद गौतम
रीवा (म.प्र.)

सांख्यकारिकाकार ने सत्यकार्यवाद को सिद्ध करने के लिये निम्न हेतु दिये हैं–

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसंभवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्चसत्कार्यम्।।

अर्थात्–कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व या कारण के कार्योंत्पत्ति के अनुकूल व्यापार के पूर्व भी विद्यमान रहता है क्योंकि–

1. असद करणात

जो सत् अर्थात् किसी न किसी रूप में कहीं विद्यमान नहीं है उसे उत्पन्न नहीं किया जा सकता। जगत् में कोई भी वस्तु सर्वथा नवीन उत्पन्न नहीं होती। क्योंकि अभाव का भाव कथमपि नहीं हो सकता। कहा भी है–**नासतो विद्यते भावः।** यदि अभाव से ही भाव की उत्पत्ति होने लगे तो अभाव के सर्वत्र सुलभ होने से सभी वस्तुओं की उत्पत्ति सर्वत्र स्वतः होनी चाहिये जो कदापि नहीं होती। अथवा जो वस्तु जिनमें विद्यमान नहीं है उससे उसकी उत्पत्ति मानने पर किसी भी वस्तु से किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति हो सकती है, पर होती है नहीं है। यदि यह कहें कि सत् एवं असत् दोनों ही वस्तु के धर्म है जो बारी–बारी से उसमे रहते हैं तो यह बात इसलिये सही नहीं हो सकती कि असत् अवस्था में जब वस्तु ही नहीं रहती तो उसमें उसके धर्म के विद्यमान होने का प्रश्न ही कहाँ उठता है। पेरने से तिल से तेल, कूटने से धान से चावल तथा दुहने से गाय के दूध निकलता है, जो इस बात का प्रमाण है कि तेल, चावल और दूध निकलने के पहले से ही तिल, धान एवं गाय में विद्यमान थे। इससे यही सिद्ध होता है कि कार्य वस्तु अपनी उत्पत्ति के पूर्व भी अपने कारण वस्तु में विद्यमान थी, कारण के कार्योत्पादक व्यापार के अनन्तर वह व्यक्त हो गई। सांख्य सूत्र में इसका दृष्टान्त देते हुये कहा है, कि जिस प्रकार मनुष्य के सींग नहीं है, अतएव वह निकलती भी नहीं। गाय, बैल आदि जिसमें वह पूर्वतः विद्यमान होती है उसी को निकलती है।[1]

यद्यपि बीज और मृत्तिका–पिण्ड आदि के नष्ट हो जाने पर ही उनसे क्रमशः अङ्कुर और घट आदि की उत्पत्ति देखी जाती है तथापि बीज आदि का ध्वंस (विनाश) अङ्कुर आदि की उत्पत्ति का कारण नहीं है, अपितु बीजादि के भाव–रूप अवयव ही कारण है, पर यदि अभाव से भाव की उत्पत्ति मानी जाये तो (बीजादि के) अभाव के सर्वत्र होने से (अभावों के विशेष न रहने से) सर्वत्र सभी कार्यों के उत्पन्न होने का दोष आ जायगा। जगत–प्रपञ्च की प्रतीति मिथ्या हैकृ ऐसा उस प्रतीति के किसी बाधक (अर्थात् पूर्ववर्त्ती मिथ्याज्ञान का बाधक उत्तरवर्ती सत्यज्ञान) के उपस्थित किये बिना नहीं कहा जा सकता है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-28454